द्वितीय अध्याय

राजेंद्र यादव –

– व्यक्तित्व एवं
– कृतित्व

- द्वि ती य अ ध्या य --

राजेन्द्र यादव व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

व्यक्तित्व --

प्रस्तावना --

राजेंद्र यादव हिन्दी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर समझे जाते हैं। वे स्वातंत्र्योत्तर काल के महत्वपूर्ण साहित्यकार माने जाते है। उनके व्यक्तित्व के बारे में बहुत ही कम जानकारी मिलती है। इसलिए यादवजी के बाल्यकाल का विवरण संक्षेप में मिलता है। स्वयं उन्होंने भी अपने बारे में बहुतही कम लिखा है। उनका विचार है -- ' कलाकार का व्यक्तित्व, उसका परिचय, उसका विश्वास और उसकी प्रतिबध्दता सभी कुछ उसकी कला होती है। [१] उनकी यह धारणा है कि ' सारा ईमानदार कथालेखन औरों के यानी पात्रों के बहाने अपनी ही बात कहता है '[२]

राजेंद्र यादवजी के व्यक्तित्व का प्रमुख पहलू लेखकीय व्यक्तित्व है। उन्होंने लेखकीय व्यक्तित्व की समस्याओंको समझाने में या सुलझाने के लिए अनेक लेखक या कलाकार पात्रों की सृष्टि करते है।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व की निर्मिती में बाल्यकाल और कैशोर्य का महत्व सबसे अधिक होता है।

---

१ चन्द्रभानु सोनवणे -- ' कथाकार राजेंद्र यादव ' - पृ.१३

२ - वही - पृ.१३

जन्म --

राजेंद्र यादवजी का जन्म सन् २५ अगस्त सन् १९२९ में आगरा में हुआ। उनके जीवन का पर्याप्त काल आगरे के राजा की मंडी नामक भाग में बीता। उनके पिता व्यवसाय में डॉक्टर थे, लेकिन साहित्य के प्रति उनके मन में रुचि थी। उन्होंने चंद्रकान्ता पढने के लिए हिन्दी सीखी। राजेंद्र यादव को बचपन में उर्दू पढाई गई थी। बचपन में नौ दस साल की आयु में उनकी टांग टूट गई थी। इस विकलांगता ने उन्हें प्रभावित किया और उनकी शारीरिक गतिविधियाँ सीमित हो गई। इस क्षति की पूर्ति के लिए मानसिक या बौध्दिक क्षेत्र में उन्होंने अपनी गतिविधियाँ बढाई। छोटी-सी आयु में ही दुनिया के सबसे बडे उपन्यास दास्तान-ए-अमीर हम्जा को पढ लिया था। उर्दू साहित्य के अनेक किस्सों को उन्होंने अभिमन्यू की आत्महत्या कहानी में इम्प्रेशनिस्टिक शैली में एक-दूसरे में घुला-मिलाकर उपस्थित किया है। बचपन के दिनों में उन्होंने किसी चाटवाले से कितनी ही कहानियां सुनी थीं। इस प्रकार हम देखते हैं कि कथा-कहानियों के संस्कार उनके मनपर बचपन से ही पडे थे। उन्होंने कथाकहानियों के इन संस्कारों के प्रभाव में देवगिरि को केन्द्र बनाकर एक उपन्यास भी लिखा है। इस उपन्यास के नायक का नाम हर्षेंद्र रखा गया था। यह उपन्यास एक अनगढ प्रयास मात्र था।

राजेंद्र यादवजी का बचपन संयुक्त परिवार में बीता था। इस परिवार की एक ईकाई के रूप में राजेंद्र यादव के माता-पिता, छह बहनें और चार भाई थे। इनके आपसी सम्बन्धों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है। इस इकाईपर पिता की वरद् छाया सन १९५३ तक रही। इस इकाई के अतिरिक्त संयुक्त परिवार में चाचा-ताउओं की इकाइया भी थी। इन इकाइयों के

पारस्पपारिक संबंधों की चर्चा भी कहीं नही मिलती। इन्हीं चाचा ताउओं में से एक को कबूतरखानी का शौक था। इन्हीं के प्रभाव के कारण राजेंद्र यादवजी का बचपन और कैशोर्य ' कबूतरबाजी और पंतग उडाने ' में बीता था। अपने खानदानी परिवार में बीते बचपन और कैशोर्य काल को दृष्टि में रखकर उन्होंने अपने को ' हाट-हाऊस-ब्रीड ' आदमी कहा है।

किसी भी व्यक्ति के जीवन में कैशोर्य के काल का महत्व असाधारण होता है। यही काल कलाकारों के जीवन में कलाओं के स्फुरण का काल है। इस काल को बिंबो के उत्कर्ष का काल कहा जाता है। राजेंद्र यादव जी के जीवन में भी इस काल का विशेष महत्व रहा है। वे मानते है कि, ' कलाकार अपने किशोर काल के अपने यथार्थ से असंपृक्त नहीं हो पाता, वह या तो उसमें हस लेता है या उसे जस्टिफाई करता है, और जिंदगी भर कला के नामपर आत्मकथा के टुकडे देता है। लेकिन उनके अपने कैशोर्य काल के अपने यथार्थ को अभिव्यक्त करनेवाले आत्मकथा के टुकडे प्रत्यक्षत: अज्ञात है। उसका जिक्र किये हुए कोई पंक्ति पढने में नहीं आई मगर वे मानते है कि मनुष्य अपने कैशोर्य काल की किसी घटना को कभी भुला नहीं सकता। मोहन राकेश ने राजेंद्र यादवजी के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए लिखा है -- ' इस सीधे - सादे आदमी की जिंदगी में भी ... तिकोन होगा, इसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी ' [३] इस त्रिकोन को जानने की उत्सुकता हमारे मन में जगती है, मगर उस उत्सुकता को पूर्ण करने का मौका उन्होंने नहीं दिया है, फिर भी उनके साहित्य को समझने का प्रयत्न किया जा सकता है।

---

३ चंन्द्रभानु सोनवणे - कथाकार राजेन्द्र यादव - पृ.२०

कैशोर्य काल में ही राजेंद्र यादवजी के साहित्यिक जीवन का प्रारंभ हुआ। साथ साथ शिक्षा भी जारी थी। एम.ए.की पढाई समाप्त कर लेने के बाद उसकी उपाधि से जुडी पढाई रुक गई। पढाई के समान उनकी रुचि लिखाई में भी थी। साहित्यिक लेखन के अतिरिक्त डायरी और पत्र लिखने में उनकी दिलचस्पी रही।

साहित्यिक लेखन राजेंद्रजी के जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। लेखन के लिए समर्पित उनके जीवन के इस प्रसंग में हमारे मन में सहजही यह सवाल उठता है कि उनकी जीविका का आधार क्या था ? एम.ए.उत्तीर्ण होने के बाद वे प्राध्यापक बन सकते थे। उन्होंने प्रथम श्रेणी में एम.ए.पास किया था लेकिन उनके स्वाभिमानी स्वभाव ने उन्हें नौकरी नहीं करने दी।

अध्यापन कार्य की अपेक्षा लेखकों को संपादन के कार्य में अधिक आकर्षण उन्हें था। उन्होंने `प्रगतिप्रकाशन` में कुछ काल काम किया। `ज्ञानोदय` में भी नौकरी की थी। उन्हें यह नौकरी भी अपने स्वभाव एवं लेखन के अनुकूल नहीं लगी।

राजेंद्र यादव जीका विवाह आगे चलकर मन्नू भंडारी के साथ हुआ। मन्नू भंडारी भी लेखिका थी और प्राध्यापिका थी। राजेंद्र यादव स्वतंत्र रुप से लेखन का कार्य कर सके, परिवार की आजीविका की चिंतासे मुक्त रह सके इसलिए ही मानो मन्नू जी ने अपनी नौकरी जारी रखी। वे दोनों लेखन के माध्यम से ही एक दूसरे के निकट आए थे। राजेंद्रजी ने मन्नू से विवाह `एक बहुत अच्छी लेखिका` मानकरही किया था। उन्होंने लिखा है - `लिखना और अधिक अच्छा लिखने का वातावरण बनाने का विश्वासही हमें निकट लाया था।`[४]

---

४ राजेंद्र यादव - `औरों के बहाने` - पृ.५१

व्यक्ति की अंतर्व्यक्तित्व की खरी पहचान परिवार के संदर्भ में होती है। राजेंद्रजी के संबंध अपने भाईयों और बहनों के साथ अच्छे ही रहे हैं। पारिवारिक संबंधों में पत्नी और बच्चों के संबंध का महत्व सबसे अधिक होता है। ये ही वे लोग हैं, जिनके साथ व्यक्ति को अधिक से अधिक रहना होता है बाहर के लोगों के साथ बन कर रहा जा सकता है। घर में पत्नी का संबंध अधिकतम सहवास के कारण विशिष्ट होता है। राजेंद्र की पत्नी मन्नू सफल लेखिका हैं। वे राजेंद्र की भार्या ही नहीं हैं तो उन दोनों में समस्तरीय मित्रता का नाता पहले है। दोनों पति-पत्नी के रूप में साथ रहते हुए, एक दूसरे के व्यक्तित्वों का आदर करते हुए अपनी अपनी जिंदगी जी रहे है। इसी कारण मन्नू विवाह के बाद भी मंडारी बनी रही है। एक दूसरे के व्यक्तित्वों का आदर करने की इस दृष्टि के कारण ही राजेंद्र यादव जी कहते है -- हमारी रूचियाँ, आदतें, स्वभाव, रहन-सहन, मनोरंजन सभी कुछ प्राय: एक दूसरे के विरोधी है, लेकिन उन्हें लेकर आज तक शायद ही कभी हम लोगों में मतभेद हुआ है।"[५] पत्नी की भी अपेक्षा छोटे बच्चों के संदर्भ में किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का अधिक अच्छा परिचय मिल सकता है। विशेषत: अवयस्क बच्चों के स्वतंत्र व्यक्तित्व के विषय में माँ-बाप अधिक नासमझ सिध्द होते हैं। इस दृष्टिसे भी राजेंद्र यादव अधिक समझदार है। उन्होंने 'बाप' को अपने पर हावी होने नहीं दिया और न ही अपनी बेटी पर अपने 'बाप' होने के बडप्पन को लादा है। ग्राहस्थ-जीवन की दृष्टि से उनका यह वैवाहिक जीवन सुख में बीत रहा है। पारिवारिक जीवन सौभाग्यशाली रहा।

---

५ चद्रमानु सोनवणे - कथाकार राजेन्द्र यादव - पृ.१९

कृतित्व --

राजेंद्र यादव जी की साहित्य यात्रा की शुरुवात कॉलेज जीवन से ही हो गयी। उनकी पहली कहानी `प्रतिहिंसा` उसी काल में लिखी। यह कहानी प्रयाग से प्रकाशित होनेवाली `कर्मयोगी` पत्रिका में छपी। यह पत्रिका १९४७ ई.की मई में प्रकाशित हुई थी। इससे पूर्व उन्होंने `देवगिरी` को केन्द्र बनाकर एक अनगढ उपन्यास को लिखने का प्रयत्न किया था। उनकी पहली उल्लेखनीय रचना ` खेल खिलौने ` है। १९५१ में ही उनका पहला उपन्यास` प्रेत बोलते है ` लिखा गया था,बाद में यही उपन्यास` सारा आकाश ` के नाम से कुछ परिवर्तनों के साथ प्रकाशित हुआ। इसी उपन्यास पर बासु चटर्जी ने सन १९७२ में चित्रपट तैयार किया।

कहानी तथा उपन्यास के साथ साथ उन्होंने पत्र एवं डायरी लेखन भी किया। डायरी लेखन का प्रभाव उनके रचनात्मक साहित्यपर देखा जा सकता है। हिन्दी के किसी भी लेखक की तुलना में उनके साहित्य में कलाकार पात्रों की संख्या अधिक है। उनकी एक षष्ठांश कहानियाँ तथा कुछ उपन्यास कलाकार पात्रों से सम्बन्धित है। ` शह और मात ` , ` एक इंच मुस्कान ` इन उपन्यासोंके केन्द्रीय पात्र कलाकार है। राजेंद्र यादवजी ने अपने साहित्य में स्थान स्थानपर यथार्थ जीवन के अनुभवों की अभिव्यक्ति पर बल दिया है। वे मानते है, आदर्श या किसी बाहरी अंकुश की झोंक में मानवहृदय की सच्ची भावनाओं,अनुभूतियों और उनकी संभावनाओं को जानबूझकर भुला देने को वे बेईमानी मानते है। आज वे हिन्दी कथाजगत् के जाने माने लेखक है लेखन को उन्होंने स्वतंत्र पेशे के रुप में अपनाया है। तीस वर्ष के प्रदीर्घ लेखन अवधि में उन्होंने साढे छ: उपन्यास और लगभग सौ कहानियाँ लिखी है। बजार की मांग के अनुसार माल मुहैया करने की पंवृत्ति से वे मुक्त रहे है। क्यों कि साहित्य सृजन की ओर उनका देखने का ढंग बाजारु नहीं है। ` अर्थकृते ` लिखने की दृष्टि उनकी कभी नही रही है।

रचनात्मक साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने आलोचनात्मक साहित्य भी लिखा है। यह साहित्य विशेषत: कहानी और उपन्यास की आलोचनासे संबंधित है। दोनों ही विधाओं की सैध्दान्तिक और व्यावहारिक आलोचनाएँ उन्होंने की है। हिन्दी की कहानी विषयक आलोचना में कहानी-स्वरुप और संवेदना का विशेष महत्व रहा है। व्यक्तिगत रागव्देषों से उनकी आलोचनाएँ सर्वथा मुक्त है। उन्होंने पत्रपत्रिकाओं के माध्यम से साहित्यिक सत्ताकेन्द्रों को हस्तगत करके गुटबंदी की राजनीति करनेवालों की निंदा की है।

राजेंद्र यादव जी का लेखन साहित्य मध्यवर्ग से लेकर ही लिखा गया है। उनके साहित्य में व्यक्तिप्रधान है। सामाजिक समस्याओं का चित्रण उनमें कम पाया जाता है, जो भी सामाजिक समस्याओंका चित्रित किया गया है वह मध्यमवर्गीय लेखक के अनुभव के क्षेत्र से संबंधित है। अपने निजी अनुभवों पर उनका अत्यंत बल रहा है। उनका यह अनुभव वैयक्तिक स्तरपर स्थूल रूप में अनुभूत हो ऐसे नहीं है तो लेखकीय व्यक्तित्व के आधारपर सूक्ष्म रुप में तादात्म्य के बलपर भी यह अनुभव भोगे हुए यथार्थ की कोटी में आता है। राजेंद्र यादव की महत्वपूर्ण समस्या, ` लेखकीय व्यक्तित्व ` से सम्बन्धित है। इसी समस्यापर उन्होंने बहुत चिंतन किया है।

उनके साहित्य के बारे में कहा जाता है कि, उनके लेखन में शिल्पका आग्रह अत्यधिक है। नए नए प्रयोगों की उत्कट लालसा, यथार्थवादी लेखन में दिखाई देती है। ` देवताओं की मूर्तियाँ ` कहानी संकलन की हर कहानी किसी न किसी को समर्पित है। इनमें से ` शरत् और प्रेमचन्द की कहानी ` अपने आपको समर्पित है।

राजेंद्र यादवजी ने लेखन कार्य करते समय विविध शैलीयों का उपयोग किया है। उनका ` शह और मात ` यह डायरी शैली का उपन्यास है। इस उपन्यास की भूमिका भी राजेंद्र यादव की डायरी के अस्तव्यस्त पन्नों के रूप में है। ` कुलटा ` इस उपन्यास के प्रारंभ में भी एक पत्र है। ` पत्र `,

` उध्दारण ` आदिका आकर्षण उन्हें विशेष रूप में था ।

इस प्रकार हमें दिखाई देता है कि राजेंद्र यादवजी का समूचा व्यक्तित्व लेखकीय है । अपना पूरा जीवन साहित्य सेवा के लिए ही बीता रहे है । स्वतंत्र रूप से लेखन का कार्य करते हुए वे अपनी रुचि के अनुवाद का कार्य भी करते रहे । लेखक के रुपमें कार्य करते हुए उन्होंने प्रकाशकों व्दारा किए जानेवाले लेखकों के शोषण का अनुभव किया । इस शोषण को समाप्त करने की इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने प्रकाशन का कार्य भी किया है । आज भी वे अक्षर प्रकाशन का कार्य संभाले हुए है । याने अब भी वे साहित्य क्षेत्र से जुडे ही ।

राजेंद्र यादव का साहित्य परिचय --

(क) कहानी संकलन --

१) देवताओं की मूर्तियाँ	- प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण, १९५२
२) खेल - खिलोने	- प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण, १९५४
३) जहाँ लक्ष्मी कैद है	- प्रथम संस्करण, १९५७
)	- प्रयुक्त संस्करण १९६०
४) छोटे-छोटे ताजमहल	- राजपाल एड सन का प्रकाशन
५) किनारे से किनारे तक	- प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण, १९६३
६) टूटना	- अक्षर प्रकाशन का संस्करण, १९७७
७) अपने पार	- प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण, १९६८
८) मेरी प्रिय कहानियाँ	- प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण, १९७१
९) ढोल	- प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण, १९७२
१०) घर की तलाश	- किशोरों के लिए लिखित कहानियाँ
११) रेखाएँ, लहरें और परछाइयाँ	- अप्रकाशित

(ख) उपन्यास --

१) प्रेत बोलते हैं - रचनाकाल - १९५१
(सारा आकाश का मूल रुप)
सारा - आकाश - प्रयुक्त संस्करण, १९५२
२) उखड़े हुए लोग - प्रथम संस्करण, १९५६
- प्रयुक्त संस्करण, १९७५
३, कुल्टा - प्रथम संस्करण, १९५८
- प्रयुक्त संस्करण १९६९
४) शह और मात - प्रथम संस्करण, १९५९
५) अनदेखे अनजाने पुल - प्रथम संस्करण, १९६३
- प्रयुक्त संस्करण, १९६९
६) मंत्रविध्द - प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण, १९६७

(ग) सह्योगी उपन्यास --

१) एक इंच मुस्कान - प्रयुक्त तृतीय संस्करण

कविता संकलन --

१) आवाज तेरी है - प्रथम संस्करण, १९६०

संपादन कार्य --

१) नये कहानीकार - पुस्तकमाला -
२) एक दुनिया - समानांतर -
३) कथायात्रा -
४) हिन्दी की आपत्तिजनक कहानियाँ -- (अप्रकाशित)

संस्मरण --

१) औरों के बहाने - प्रथम संस्करण

आलोचना --

१) कहानी : स्वरुप और संवेदना - प्रथम संस्करण, १९६८
२) अठारह उपन्यास - प्रथम संस्करण
३) उपन्यास : स्वरुप और संवेदना -- अप्रकाशित
४) प्रेमचंद की विरासत

इंटरव्यू --

१) एंटन चेखव : एक इंटरव्यू

अनुवाद --

१) अजनबी - मूल लेखक अलबेयर कामू
२) युगनेता - मूल लेखक लर्मतोव
३) एक मछुआ : एक मोती - मूल लेखक स्टाइनबेक
४) वसंत प्लावन - मूल लेखक तुर्गनेव
५) प्रथम प्रेम - मूल लेखक तुर्गनेव
६) चेखव के तीन नाटक
७) चेखव, कापका इत्यादि की कहानियाँ -

राजेंद्र यादवजी सफल उपन्यासकार एवं कहानीकार है यह उपर्युक्त साहित्य प्रक्रिया को नजरअंदाज करते हुए स्पष्ट होता है। साहित्य के विविध क्षेत्रों से उनका स्पर्श हुआ है इतनाही नहीं उन्होंने अपना आजीवन साहित्य-सृजन में बिता है यह स्पष्ट होता है।